" सुर्ख़ पलकों से भींगा है, तेरा जज़्ब-ऐ-क़ायनात,
ज़रा अर्श के साथ,
ख़ाक-ऐ-फ़र्श का मिज़ाज़ भी फरमाये हुज़ूर. 💐"

उड़ते गुलाल की पृष्ठभूमि में, अपने चिरपरिचित अन्दाज़ को परोसते बड़े भले लंगते है, अपने प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र भाई जी.! यह सही है कि, पिछले कई दशक के बाद एक बड़े समूह में राष्ट्रीयता की भावना ने जोड़ पकड़ा है, परन्तु मेरे कथन का यह मतलब कतई नही निकालना चाहिए कि, पहले जनमानस में राष्ट्रीयता थी ही नही..! हाँ, इधर राष्ट्रीयता को महसूसने और महसूस करवाने की कवायद कुछ तीव्र हुईहै।
अगर पिछले कुछ वर्षों के विभिन्न चुनाव-परिणामो को विवेचित किया जाये तो, कहीं ख़ुशी-कहीं गम वाली स्थिति से सामना होता है। ख़ुशी और गम से इतर, अगर जनमानस के विश्वास को सर-आँखों पर बिठाया जाये, तो माननीय नरेन्द्र भाई जी में लोगो का विश्वास परिलक्षित होता दीखा है।
संसदीय चुनाव में प्रचंड बहु मतका आना और फिर दूसरे क्षेत्रीय चुनावो में, जादू का न चल पाना और पुनः अगले चुनाव में सरकार बनाने की स्थिति में खुद को ले आना, ऐसे कुछ ऐसे दृष्टांत है, जिनसे यह समझना होगा कि, जनता तो सर्वदा जनार्दन ही होती है, पल में अर्श-पल में ख़ाक..!
हाल के कुछ राज्यो के चुनाव परिणामो ने नई बहस भी छेड़ी, किसी दल ने राज्यपाल की भूमिका पर ही सवाल खड़े कर दिए, तो किसी ने पूर्व में खुद के द्वारा ही समर्थित इलेक्ट्रॉनिक मशीन की सत्यता पर ही प्रश्न-चिन्ह लगा दिया.!
ये दीगर बात है कि, विजय की स्थति में सब सिस्टम सभी को ठीक लगता है, पराजय की स्थिति में सब सिस्टम गड़बड़ हो जाता है। यह मानसिकता कमोबेश हर दल की देखी गयी है, इतिहास में देखा जा सकता है।
मूल बिन्दु यह कि, चलिये येन-केन-प्रकारेण बहु संख्यराज्यो में सरकारें तो बन गयी, यूँ भी कह सकते है कि, जनता ने सरकार बनाने का मौका दिया, परन्तु अब अगर प्रचण्ड बहु मतके स्वाद के बाद बने विभिन्न राज्यीय सरकारों ने जनता की अपेक्षाओं और विश्वास पर खड़ा उतरने में कमी की, तो दिन दूर नही, पुनः मुषको भवः वाली स्थिति भी सामने आ जायेगी। यह कोई नयी बात नही, ऐसा होता आया है।
बहु धाऐसा देखा गया है कि, प्रचण्ड सफलता अपने साथ दम्भ, घमण्ड, कार्यहीनता और थोड़ी बहु तअनुशाशन हीनता साथ में निरंकुशता भी ले के आती है, इन्ही दुषविचारो से संस्था और व्यक्ति विशेष को बचाने की आवश्यकता है..!
दिल्ली से चलने वाली पानी की पाइप लाइन स्वच्छ जल लेकर, हर गाँव-कसबे तक पहुचे, यह जरूरी है, कि जिस तन्मयता और बढ़िया प्लानिंग के साथ पाइप लाइन को बिछाने की कवायद हुई, उसी मानसिकता और गहराई से विषेषज्ञ के दलों को पाइप के रखरखाव की भी जिम्मेदारी देनी पड़ेगी।
रही बात, एलेक्ट्रोनिक मशीन के सत्यता पर संदेह करने की, इस सन्दर्भ में यह कहना उचित होगा कि, केवल शक के बिना पर एक व्यवस्था को चुनौती नही देनी चाहिए।
पहले भी बच्चो की परीक्षा में कम अंक आने पर, सारी गलती परीक्षक को देने की परम्परा रही थी, जब से एक नियत शुल्क लेकर, उत्तर पुस्तिका को पुनः जाँच करवाने की व्यवस्था हुईहै, बच्चो की शिकायतें भी कम हो गयी है।
चुनाव में पारदर्शिता हो, यह अत्यावश्यक है। जिस किसी चुनाव्-परिणाम पर किसी भी दल द्वारा अविश्वास या संदेह किया जाये, एक भारी-भरकम शुल्क लेकर उसकी निष्पक्ष जाँच तो करवा ही देनी चाहिए, ताकि यह भय भी रहे कि, अगर आरोप में दम हो, तो सही,नही तो शुल्क की जब्ती निश्चित..!
बस हार के विषाद से बचने के लिए, किसी भी राष्ट्रीय संस्था पर संदेह करना उचित नही..!
खैर, राजनीतिक विषयो को कम ही समझता आया हूँ, ऐसे भी मेरे मन्द-बुद्धि में ऐसे परिपक़्व् और उम्दा विचार थोड़े ही समाते है..! मन में आया, तो उवाच दिया। हम जैसों के लिए तो, "जो प्रतिपाले-सोहे नरेषु" वाली कहावत ही सटीक है, बस अपने राष्ट्र की राष्ट्रीयता और युवाओ का राष्ट्रवाद सम्प्रभु और अक्षुण्ण रहे..!
सोच कर ही मन महो-महो..